3 भारत की शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण

6 सरकारें बदली, लेकिन जनता की ताकत कायम

7 पेड़ लगाना आसान, जंगल बनाना जरूरी

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 17 अंक : 14 प्रति सोमवार, 24 अगस्त 2026 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

उपचुनाव के झटके से भाजपा सतर्क, 2027 की जंग के लिए संगठन ने कसी कमर

सात राज्यों की चुनावी चुनौती, सकते में भाजपा, कांग्रेस की कब खुलेगी नींद?

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

मध्य प्रदेश की दतिया और बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीटों के हालिया उपचुनाव परिणामों ने भारतीय जनता पार्टी के सामने कुछ सवाल खड़े किए हैं। इन दोनों परिणामों को जोड़कर देखें तो भाजपा के लिए संदेश साफ है- संगठन की ताकत के भरोसे चुनाव जीतने की रणनीति के साथ अब स्थानीय सामाजिक समीकरण, उम्मीदवार चयन, बूथ प्रबंधन और मतदाता संपर्क को और अधिक धार देने की जरूरत है। दतिया में कांग्रेस के घनश्याम सिंह ने भाजपा के आशुतोष तिवारी को हराया। इस चुनाव में उम्मीदवार चयन और भाजपा के भीतर के मतभेद भी चर्चा में रहे। वहीं बिहार की बांकीपुर सीट का परिणाम भाजपा के लिए कहीं अधिक बड़ा राजनीतिक झटका माना जा सकता है। जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर ने भाजपा उम्मीदवार नीरज कुमार सिन्हा को हराकर उस सीट पर कब्जा किया, जिसे भाजपा 1995 से लगातार जीतती आ रही थी।

क्या भाजपा घबरा गई है?

इन परिणामों को देखकर यह कहना कि भाजपा 'घबरा गई' है, शायद राजनीतिक रूप से अतिशयोक्ति होगी। लेकिन भाजपा सतर्क हो गई है। किसी एक उपचुनाव में हार सत्ता परिवर्तन का संकेत नहीं होती। लेकिन जब संगठन किसी मजबूत सीट पर अप्रत्याशित परिणाम देखता है तो वह उसे चेतावनी के तौर पर जरूर लेता है। बांकीपुर की हार इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल एक सीट का नुकसान नहीं है, यह उस धारणा को चुनौती देती है कि मजबूत संगठन और पारंपरिक वोट बैंक के कारण कुछ सीटें स्वतः सुरक्षित रहती हैं। दतिया ने दूसरा संदेश दिया स्थानीय स्तर पर उम्मीदवार चयन, गुटीय संतुलन और कार्यकर्ताओं की सक्रियता को नजरअंदाज करने की कीमत चुकानी पड़ी है।

नितिन नबीन की नई टीम और 2027 की चुनौती

भाजपा ने अपनी नई राष्ट्रीय टीम की घोषणा की है। नई टीम में 65 सदस्य हैं, जिनमें बड़ी संख्या में नए चेहरे शामिल हैं। इस टीम का सबसे बड़ा परीक्षण आने वाले विधानसभा चुनाव होंगे। 2027 में सात राज्यों- उत्तरप्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश और गुजरात में चुनाव होना हैं। इनमें उत्तर प्रदेश अपने 403 विधानसभा क्षेत्रों के कारण सबसे बड़ा राजनीतिक मैदान है। गुजरात भाजपा के लिए संगठनात्मक प्रतिष्ठा का प्रश्न होगा। पंजाब में पार्टी को अलग तरह की सामाजिक और राजनीतिक रणनीति बनानी होगी, जबकि उत्तराखंड और गोवा में सत्ता बनाए रखने की चुनौती होगी। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस से मुकाबला और मणिपुर में जटिल सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियां भाजपा के सामने अलग-अलग तरह की चुनौतियां रखेंगी। यानी नितिन नबीन की टीम के पास प्रयोग करने के लिए बहुत कम समय है। (शेष पेज 2 पर)

साय सरकार की दूरदर्शी पहल से कोरबा में मानव-हाथी संघर्ष पर लगी लगाम

मानव-हाथी द्वंद प्रबंधन में छत्तीसगढ़ की नई मिसाल, छत्तीसगढ़ सरकार की योजनाओं से कोरबा मॉडल बना प्रेरणादायी

-विजया पाठक

छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व वाली सरकार वन्यजीव संरक्षण और ग्रामीणों की सुरक्षा के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में लगातार ठोस पहल कर रही है। इसका प्रभाव कोरबा जिले में मानव-हाथी द्वंद प्रबंधन के रूप में सामने आया है। हाथियों के प्राकृतिक आवास और पारंपरिक विचरण मार्गों के संरक्षण के साथ-साथ प्रभावित ग्रामीणों की सुरक्षा, त्वरित सूचना, राहत और आजीविका के अवसरों पर एक साथ काम किए जाने से कोरबा मॉडल देश के अन्य हाथी प्रभावित क्षेत्रों के लिए भी अनुकरणीय बनता दिखाई दे रहा है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार की नीति में वन, वन्यजीव और वनवासी समुदायों के हितों को साथ लेकर चलने पर जोर दिखाई देता है। इसी सोच को प्रशासनिक स्तर पर आगे बढ़ाते हुए कोरबा जिला प्रशासन और वन विभाग ने मानव-हाथी संघर्ष को केवल तत्काल राहत की समस्या मानने के बजाय इसके दीर्घकालिक समाधान पर काम शुरू किया है। कलेक्टर कुणाल दुदावत के मार्गदर्शन तथा कटघोरा वनमंडल के डीएफओ कुमार निशांत के नेतृत्व में तकनीक, वैज्ञानिक प्रबंधन, जनजागरूकता और सामुदायिक भागीदारी को एक साथ जोड़कर व्यवस्था विकसित की गई है। (शेष पेज 2 पर)

कमलनाथ ने संवारा, भाजपा शासन में बिगड़ा छिंदवाड़ा?

-विजया पाठक

छिंदवाड़ा की पहचान केवल मध्यप्रदेश के एक जिले के रूप में नहीं, बल्कि देश के सामने एक ऐसे क्षेत्र के रूप में बनी है, जहां विकास को लंबे समय तक जनसेवा और दूरदृष्टि के साथ आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया। इस पहचान के निर्माण में पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व सांसद कमलनाथ की चार दशक से अधिक लंबी राजनीतिक यात्रा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सिंचाई और औद्योगिक विकास जैसे क्षेत्रों में किए गए कार्यों के कारण कमलनाथ ने छिंदवाड़ा को अपनी राजनीति का केंद्र ही नहीं, बल्कि अपनी कर्मभूमि बनाया। यही कारण है कि आज जब छिंदवाड़ा में अपराध की घटनाएं लगातार चर्चा में आती हैं, तो कमलनाथ की चिंता को केवल राजनीतिक बयान के रूप में देखना उचित नहीं होगा। जिस क्षेत्र को उन्होंने वर्षों तक विकास, व्यवस्था और जनविश्वास की मिसाल बनाने का प्रयास किया, वहां महिलाओं और बेटियों के खिलाफ अपराध, हत्या, नशे से जुड़े विवाद और अवैध शराब की शिकायतें सामने आना निश्चित रूप से चिंता का विषय है। (शेष पेज 2 पर)

भाजपा में मंथन, कांग्रेस के लिए भी खतरे की घंटी

(पेज 1 का शेष)

मैदान में उतरना होगा, केवल दिल्ली से रणनीति नहीं चलेगी

2027 के चुनावों से काफी पहले संगठनात्मक गतिविधियां तेज होना स्वाभाविक है। अब चुनौती यह होगी कि राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा बनाई गई रणनीति बूथ तक कितनी प्रभावी ढंग से पहुंचती है। केवल पदाधिकारियों की नियुक्ति या बैठकों से चुनाव नहीं जीते जाते। कार्यकर्ता को यह महसूस होना चाहिए कि संगठन उसके साथ खड़ा है और उसकी भूमिका चुनावी प्रक्रिया में निर्णायक है। मध्य प्रदेश की टीम पर भी बड़ी जिम्मेदारी

नितिन नबीन की नई टीम में मध्य प्रदेश से जुड़े नेताओं को मिली जिम्मेदारियों को भाजपा के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है। राष्ट्रीय संगठन में मध्य प्रदेश की मौजूदगी यह बताती है कि पार्टी इस राज्य के संगठनात्मक अनुभव और चुनावी प्रबंधन को राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्व दे रही है। मध्य प्रदेश की राजनीति में संगठन और मीडिया प्रबंधन का अनुभव भाजपा की एक प्रमुख ताकत रहा है। इसी संदर्भ में आशीष अग्रवाल का उल्लेख जरूरी है। मध्य प्रदेश भाजपा के मीडिया प्रकोष्ठ में लंबे समय से सक्रिय आशीष अग्रवाल ने मीडिया, प्रवक्ताओं और संगठन के बीच समन्वय को मजबूत करने में भूमिका निभाई है। उन्हें प्रदेश मीडिया प्रभारी के रूप में दोबारा जिम्मेदारी मिलना भी उनके संगठनात्मक अनुभव और मीडिया प्रबंधन पर पार्टी के भरोसे को दर्शाता है। उनकी खासियत यह रही है कि वे केवल प्रेस विज्ञप्ति तक सीमित मीडिया प्रबंधन के बजाय राजनीतिक मुद्दों पर त्वरित प्रतिक्रिया और पार्टी के नैरेटिव को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश करते रहे हैं। छत्तीसगढ़ महासमुंद से लोकसभा सांसद रूप कुमारी चौधरी को महिला मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है। वहीं दीपक महस्के को राष्ट्रीय सोशल मीडिया संयोजक (IT/Social Media Head) की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आने वाले चुनावों में यह भूमिका और महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि चुनाव अब मैदान के साथ-साथ सोशल मीडिया और डिजिटल स्पेस में भी लड़े जाते हैं।

कांग्रेस के लिए भी यह आत्ममंथन का समय है

भाजपा को उपचुनाव के नतीजों से चेतावनी मिली है तो कांग्रेस को भी इसे अपनी बड़ी सफलता समझकर सो नहीं जाना चाहिए। दतिया की जीत निश्चित रूप से कांग्रेस के लिए उत्साहवर्धक है, लेकिन एक सीट जीतना और अगले सात राज्यों में प्रभावी चुनावी संगठन खड़ा करना दो अलग-अलग बातें हैं। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह उपचुनाव की सफलता को स्थायी राजनीतिक समीकरण में कैसे बदलती है। 2027 के चुनावों के लिए अब समय तेजी से कम हो रहा है। कांग्रेस को अभी से राज्यवार रणनीति, सीटवार सर्वेक्षण, उम्मीदवारों की पहचान, स्थानीय नेतृत्व के बीच समन्वय और बूथ समितियों को सक्रिय करने की जरूरत है। केवल चुनाव के कुछ महीने पहले बड़े नेताओं की रैलियां शुरू कर देने से भाजपा जैसी कैडर आधारित पार्टी को चुनौती देना आसान नहीं होगा।

साय सरकार की दूरदर्शी पहल से कोरबा में मानव-हाथी संघर्ष पर लगी लगाम

(पेज 1 का शेष)

तकनीक बनी सुरक्षा की ताकत

कोरबा मॉडल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल है। हाथियों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए 24×7 हाथी नियंत्रण केंद्र, टोल-फ्री हेल्पलाइन, थर्मल ड्रोन, सीसीटीवी निगरानी और गजसंकेत मोबाइल ऐप जैसी व्यवस्थाओं का उपयोग किया जा रहा है। प्रशिक्षित हाथी मित्र दल भी जमीनी स्तर पर लगातार सक्रिय रहते हैं। गजसंकेत ऐप के माध्यम से हाथियों की वास्तविक समय की गतिविधियों की जानकारी एकत्रित करने और उसे प्रभावित गांवों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। सितंबर 2023 से जून 2026 तक इस ऐप पर 1,097 हाथी मूवमेंट एंट्री दर्ज की गईं। इसी अवधि में 2,68,782 से अधिक अलर्ट ग्रामीणों तक पहुंचाए गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि सूचना तंत्र को केवल कार्यालयीन रिकॉर्ड तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उसे सीधे ग्रामीणों की सुरक्षा से जोड़ा गया है। मानव-हाथी संघर्ष में कुछ मिनटों की सूचना भी कई बार जीवन बचाने में महत्वपूर्ण साबित होती है। ऐसे में रियल टाइम अलर्ट व्यवस्था ग्रामीणों को संभावित खतरे से पहले सचेत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका उद्देश्य हाथियों को अनावश्यक रूप से परेशान करना नहीं, बल्कि मनुष्य और वन्यजीव दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

जनहानि में कमी

कोरबा में किए जा रहे प्रयासों का असर उपलब्ध आंकड़ों में भी दिखाई देता है। वर्ष 2020-21 में मानव-हाथी संघर्ष के कारण जहां 9 जनहानि के मामले सामने आए थे, वहीं वर्ष 2025-26 में यह संख्या घटकर 3 रह गई। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्ष 2024-25 और 2025-26 में मानव घायल होने के मामले शून्य दर्ज किए गए। यह बदलाव प्रशासन और वन विभाग के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। समय पर सूचना, हाथी मित्र दलों की सक्रियता, रात्रिकालीन गश्त और संवेदनशील क्षेत्रों की लगातार निगरानी ने संघर्ष की परिस्थितियों को नियंत्रित करने में मदद की है। हालांकि मानव-हाथी संघर्ष जैसी चुनौती का पूर्ण समाधान आसान नहीं है, लेकिन जनहानि और घायल होने के मामलों में आई कमी यह संकेत देती है कि व्यवस्थित प्रबंधन सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

मकानों को नुकसान में भी बड़ी कमी

हाथियों की आवाजाही से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में मकानों और फसलों को होने वाला नुकसान लंबे समय से बड़ी चुनौती रहा है। कोरबा में इस दिशा में भी सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। वर्ष 2020-21 में 513 मकानों को नुकसान पहुंचा था, जबकि 2025-26 में यह संख्या घटकर 33 रह गई। यह कमी केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि उन ग्रामीण परिवारों के लिए बड़ी राहत का संकेत है, जिनकी संपत्ति और आजीविका हाथियों की आवाजाही से प्रभावित होती है। समय पर अलर्ट मिलने से ग्रामीण संवेदनशील क्षेत्रों से दूर रह सकते हैं और प्रशासन को भी संभावित नुकसान वाले क्षेत्रों में पहले से तैयारी करने का अवसर मिलता है।

हाथियों के लिए सुरक्षित कॉरिडोर पर जोर

मानव-हाथी द्वंद का स्थायी समाधान केवल हाथियों को गांवों से दूर रखने में नहीं, बल्कि उनके प्राकृतिक आवास और विचरण मार्गों को सुरक्षित रखने में है। इसी दृष्टिकोण के तहत लेमरू हाथी रिजर्व क्षेत्र में वैज्ञानिक आधार पर संरक्षण कार्य किए जा रहे हैं। लेमरू हाथी रिजर्व लगभग 1 लाख 99 हजार 548 हेक्टेयर में फैला हुआ है। इसमें कटघोरा, कोरबा, धरमजयगढ़ और सरगुजा वनमंडलों के 11 वन परिक्षेत्र शामिल हैं। इतने बड़े क्षेत्र में हाथियों की आवाजाही और उनके आवास की निगरानी अपने आप में चुनौतीपूर्ण कार्य है। वन विभाग एआई, जीआईएस आधारित योजना, डिजिटल मैपिंग और वैज्ञानिक विश्लेषण जैसे आधुनिक माध्यमों से हाथी कॉरिडोर और संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान कर रहा है। इसका उद्देश्य हाथियों के पारंपरिक मार्गों को सुरक्षित रखना और उन्हें मानव बस्तियों की ओर आने से रोकने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन विकसित करना है। यह दृष्टिकोण मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सरकार के वन एवं वन्यजीव संरक्षण को विकास और जनहित से जोड़ने के प्रयासों के अनुरूप दिखाई देता है।

वनवासियों की आजीविका को भी बनाया आधार

किसी भी वन संरक्षण नीति की सफलता तब तक संभव नहीं है, जब तक स्थानीय समुदाय उसके केंद्र में न हो। कोरबा में वन क्षेत्र से जुड़े ग्रामीणों की आजीविका को मजबूत करने के लिए विभिन्न गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसान वृक्ष मित्र योजना, लाख उत्पादन, दोना-पत्तल निर्माण, महुआ और कोदो प्रसंस्करण, अगरबत्ती निर्माण, सिलाई कार्य तथा इको-टूरिज्म जैसी गतिविधियों के माध्यम से आय के वैकल्पिक साधन विकसित किए जा रहे हैं। इससे ग्रामीणों को स्थानीय स्तर पर रोजगार और आय के अवसर मिल रहे हैं तथा वन संसाधनों के प्रति संरक्षण की भावना भी मजबूत हो रही है। यह पहल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मानव-वन्यजीव संघर्ष का संबंध केवल जंगल और वन्यजीवों से नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था से भी है। जब स्थानीय लोगों को टिकाऊ आजीविका के अवसर मिलते हैं, तो वन संरक्षण में उनकी भागीदारी बढ़ती है और संरक्षण तथा विकास के बीच बेहतर संतुलन बनाया जा सकता है।

ऑनलाइन मुआवजा प्रणाली से बढ़ेगी पारदर्शिता

हाथी प्रभावित परिवारों के लिए समय पर मुआवजा उपलब्ध कराना भी सरकार की जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसी दिशा में कोरबा में ऑनलाइन मुआवजा प्रबंधन प्रणाली विकसित करने की पहल की जा रही है। प्रस्तावित व्यवस्था के तहत जनहानि, पशुहानि, फसल क्षति और संपत्ति नुकसान से जुड़े मामलों का ऑनलाइन पंजीयन, दस्तावेजों का डिजिटल सत्यापन, आवेदन की ऑनलाइन ट्रैकिंग और समयबद्ध निराकरण किया जा सकेगा। इससे प्रभावित ग्रामीणों को कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता कम होगी और मुआवजा प्रक्रिया अधिक पारदर्शी एवं जवाबदेह बन सकेगी।

कमलनाथ ने संवारा, भाजपा शासन में बिगड़ा छिंदवाड़ा?

(पेज 1 का शेष)

दो वर्षों की घटनाएं बढ़ाती हैं चिंता

पिछले करीब दो वर्षों में छिंदवाड़ा से सामने आई कई घटनाओं ने जिले की कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। मार्च 2024 में एक नाबालिग के साथ दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या का मामला सामने आया था। 2025 में भी महिलाओं और परिवारों से जुड़े गंभीर अपराधों की खबरें सामने आती रहीं। जून 2025 में लावाघोघरी थाना क्षेत्र में शराब को लेकर हुए विवाद के बाद एक व्यक्ति द्वारा अपनी पत्नी की लाठी-डंडों से पीटकर हत्या करने का मामला सामने आया। मई 2025 में शराब के नशे में हुए विवाद के दौरान एक बेटे द्वारा अपने पिता की कथित तौर पर हत्या किए जाने की खबर भी सामने आई। इन घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि नशे और अपराध का संबंध केवल अवैध कारोबार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिवार और समाज की सुरक्षा को भी प्रभावित करता है।

बेटियों की सुरक्षा पर सबसे बड़ा सवाल

छिंदवाड़ा में नाबालिगों और महिलाओं के खिलाफ सामने आई घटनाएं सरकार से जवाब मांगती हैं। मार्च 2025 में डेढ़ साल की बच्ची से दुष्कर्म के मामले में आरोपी को आजीवन कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। इसी तरह जुन्नारदेव क्षेत्र में नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में भी आरोपी को आजीवन कारावास की सजा हुई। ये मामले यह जरूर दिखाते हैं कि पुलिस और न्याय व्यवस्था ने कार्रवाई की, लेकिन साथ ही यह सवाल भी छोड़ जाते हैं कि ऐसी घटनाओं को पहले ही रोकने के लिए स्थानीय स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था कितनी प्रभावी है। महिलाओं की सुरक्षा केवल एफआईआर दर्ज करने और आरोपी को गिरफ्तार करने का विषय नहीं है। पुलिस की सक्रियता, संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी, शिकायतों पर तत्काल प्रतिक्रिया, स्कूल-कॉलेजों के आसपास सुरक्षा और नशे के कारोबार पर प्रभावी नियंत्रण इन सभी को मिलाकर सुरक्षित वातावरण तैयार होता है।

कमलनाथ के दौर की व्यवस्था को याद कर रही जनता

छिंदवाड़ा की राजनीति में कमलनाथ का स्थान इसलिए अलग है क्योंकि उनका रिश्ता इस क्षेत्र से दशकों पुराना है। उन्होंने छिंदवाड़ा को केवल चुनाव जीतने के लिए नहीं देखा, बल्कि अपने राजनीतिक जीवन का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र के विकास को समर्पित किया। यही वजह है कि छिंदवाड़ा की सड़क से लेकर अस्पताल तक और शिक्षा से लेकर रोजगार तक की चर्चा में कमलनाथ के योगदान का उल्लेख बार-बार होता है। उनके समर्थकों के लिए छिंदवाड़ा का विकास मॉडल केवल इमारतों और सड़कों का मॉडल नहीं था। उसके पीछे एक ऐसी प्रशासनिक सोच भी थी जिसमें नागरिकों को व्यवस्था पर भरोसा दिलाना महत्वपूर्ण माना जाता था। आज भाजपा शासन में जब अपराध की घटनाएं सुर्खियां बनती हैं तो स्वाभाविक रूप से लोग उस पुराने दौर से तुलना करते हैं। यह तुलना केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि शासन की प्राथमिकताओं से जुड़ा सवाल है। विकास तभी सार्थक है जब नागरिक अपने घर, सड़क, बाजार और सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षित महसूस करे।

सांसद बंटी विवेक साहू को भी देना होगा जवाब

वर्तमान सांसद बंटी विवेक साहू को लेकर राजनीतिक स्तर पर आरोप लगाए जा रहे हैं कि जिले में सक्रिय कुछ अपराधियों और बदमाशों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है। ऐसे आरोप गंभीर हैं और इनकी स्वतंत्र तथा निष्पक्ष जांच होनी चाहिए बिना प्रमाण किसी व्यक्ति को अपराधियों का संरक्षक बताना उचित नहीं है। लेकिन लोकतंत्र में यह सवाल जरूर पूछा जाना चाहिए कि यदि किसी अपराधी को राजनीतिक संरक्षण मिलने की शिकायत जनता या विपक्ष द्वारा की जाती है, तो उसकी जांच क्यों न हो?

छिंदवाड़ा को फिर चाहिए भरोसे का शासन

कमलनाथ ने चार दशक से ज्यादा समय तक इस क्षेत्र से जुड़े रहने के कारण यहां की उपलब्धियों को उन्होंने अपनी उपलब्धि और यहां की समस्याओं को अपनी समस्या माना। इसलिए आज छिंदवाड़ा में अपराध की घटनाओं को लेकर उनकी चिंता को उस लंबे रिश्ते के संदर्भ में समझना चाहिए। छिंदवाड़ा की जनता ने विकास देखा है। उसने बड़े सपने देखे हैं। उसने यह भी देखा है कि एक पिछड़े माने जाने वाले क्षेत्र को योजनाबद्ध प्रयासों के जरिए किस तरह राष्ट्रीय पहचान दिलाई जा सकती है। अब उसी जनता की अपेक्षा है कि विकास के साथ सुरक्षा और सम्मान का वातावरण भी मजबूत हो। आज आवश्यकता किसी दल विशेष के समर्थन या विरोध से आगे बढ़कर एक स्पष्ट सवाल पूछने की है। क्या छिंदवाड़ा का नागरिक सुरक्षित है? क्या उसकी बेटी सुरक्षित है? क्या अवैध शराब के कारोबार पर प्रभावी अंकुश है? क्या अपराधी कानून से डरता है? और क्या किसी राजनीतिक प्रभावशाली व्यक्ति के कारण कानून की धार कमजोर नहीं पड़ती? कमलनाथ की छिंदवाड़ा के प्रति चिंता इसी व्यापक प्रश्न से जुड़ी है।

एम्स भोपाल में 39वीं आईएपी स्नातक बाल चिकित्सा प्रश्नोत्तरी का संभागीय दौर आयोजित

-संवाददाता

जगत प्रवाह. भोपाल। एम्स भोपाल में 39वीं भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी की स्नातक बाल चिकित्सा प्रश्नोत्तरी का संभागीय दौर आयोजित किया गया। एम्स भोपाल ने भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी के सहयोग से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया। यह प्रतियोगिता हर वर्ष चिकित्सा महाविद्यालयों के स्नातक विद्यार्थियों के लिए आयोजित की जाती है। कार्यक्रम का आयोजन एम्स भोपाल के बाल चिकित्सा विभागाध्यक्ष प्रोफेसर (डॉ.) शिखा मलिक के मार्गदर्शन में किया गया। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल .डॉ नरेन्द्र कोतवाल ने प्रतियोगिता में शामिल सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में केंद्रीय भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी कार्यकारिणी मंडल के सदस्य डॉ. राजेश टिक्कास और भोपाल एसोसिएशन ऑफ पीडियाट्रिशियन के अध्यक्ष डॉ. दिपांकर सरकार उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया और पूरे कार्यक्रम के दौरान अपना सहयोग दिया।

एम्स भोपाल की टीम बनी विजेता

सड़क खुदाई में मिले सिक्के, लोगों की लगी भीड़

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। मध्य प्रदेश के नर्मदापुरम जिले में सड़क निर्माण के लिए खुदाई के दौरान जमीन के नीच कुछ ऐसा मिला की सारे मजदूर हैरान रह गए। देखते-देखते यह खबर आग की तरह पूरे इलाके में फैल गई और खुदाई स्थल बड़ी संख्या में लोग पहुंचने लगे। भीड़ बढ़ता देख पुलिस को बुलाना पड़ा। खुदाई के दौरान मिली चीज की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASI) को इसकी जानकारी दी। दरअसल, इटारसी के केसला क्षेत्र में सड़क खुदाई के दौरान मिले प्राचीन सिक्के मिलने से क्षेत्र में कौतूहल और चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया। क्षेत्र में सड़क खुदाई कार्य के दौरान बड़ी मात्रा में ब्रिटिश काल के बेशकीमती सिक्के मिलने की खबर से हड़कंप मच गया है। यह सिक्के करीब 80-100 साल पुराने बताए जा रहे है। हालांकि, आधिकारिक तौर पर पुलिस के हाथ अब तक केवल तीन ही सिक्के लगे हैं, जिनमें से एक वर्ष 1907 और दो वर्ष 1940 के बताए जा रहे हैं। क्षेत्र में खुदाई के दौरान मिले जिस सिक्के की सबसे ज्यादा चर्चा की गई वह था 1940 के समय का सिक्का जो ब्रिटिश काल का बताया जा रहा है। इस सिक्के में एक तरफ ब्रिटिश राजा जॉर्ज सिक्थ किंग एम्परर तो दूसरी तरह 'वन रूपी इंडिया' यानी भारतीय एक रूपए 1940 लिखा हुआ है। यह सिक्का दिखने में चमकदार नजर आ रहा है।

राजनीति से आगे: भारत की शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण

भारत एक जीवंत लोकतंत्र है, जहाँ चुनाव, सरकारों का गठन, मंत्रिमंडल में फेरबदल और राजनीतिक बहसें अक्सर राष्ट्रीय चर्चा का केंद्र बनी रहती हैं। लोकतंत्र में इन घटनाओं का अपना महत्व है, लेकिन इन सबसे भी अधिक महत्वपूर्ण एक ऐसा विषय है जिस पर निरंतर और गंभीर ध्यान देने की आवश्यकता है- भारत की शिक्षा व्यवस्था का पुनर्निर्माण। किसी भी राष्ट्र का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होता कि उस पर कौन शासन करता है, बल्कि इस बात से तय होता है कि उसके बच्चों को कैसी शिक्षा मिलती है। शिक्षा किसी भी विकसित और समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला होती है। यह केवल पढ़ना-लिखना नहीं सिखाती, बल्कि सोचने, समझने, निर्णय लेने, नवाचार करने और जिम्मेदार नागरिक बनने की क्षमता भी विकसित करती है। जिन देशों ने शिक्षा को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाया, वे आज विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं। भारत के पास विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी है, इसलिए शिक्षा हमारे लिए केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।

-डॉ. विजय गर्ग

पिछले वर्षों में भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन अनेक चुनौतियाँ आज भी मौजूद हैं। अनेक सरकारी विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का अभाव, योग्य शिक्षकों की कमी, पुरानी शिक्षण पद्धतियाँ, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शैक्षिक असमानता तथा डिजिटल संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ अभी भी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही हैं। कोविड-19 महामारी ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि डिजिटल शिक्षा तक सभी की समान पहुँच नहीं है।

आज की शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि उसका केंद्र सीखना नहीं, बल्कि परीक्षा और अंक बन गए हैं। विद्यार्थी ज्ञान अर्जित करने के बजाय अधिक अंक प्राप्त करने की दौड़ में शामिल हो गए हैं। रटकर पढ़ने की प्रवृत्ति ने जिज्ञासा, रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन जैसी क्षमताओं को पीछे छोड़ दिया है। जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन और नई तकनीकों के इस युग में सफलता उन्हीं को मिलेगी जो समस्याओं का समाधान खोज सकें, नए विचार प्रस्तुत कर सकें और बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सकें।

इसलिए शिक्षा सुधारों का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम बदलना नहीं, बल्कि सीखने की पूरी संस्कृति को बदलना होना चाहिए। विद्यालयों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किक सोच, रचनात्मकता, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता और जीवन कौशल को समान महत्व दिया जाना चाहिए। पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल, संगीत, कला, योग, पर्यावरण शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा को भी मुख्यधारा में लाना होगा। शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की आत्मा होते हैं। यदि शिक्षक प्रेरित, प्रशिक्षित और सम्मानित होंगे, तभी शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा। शिक्षकों को

आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण, निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर, बेहतर कार्य वातावरण तथा समाज में उचित सम्मान मिलना चाहिए। शिक्षा सुधार की कोई भी योजना शिक्षकों को केंद्र में रखे बिना सफल नहीं हो सकती।

उच्च शिक्षा को भी नई दिशा देने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालयों को केवल डिग्री प्रदान करने वाले संस्थान नहीं, बल्कि अनुसंधान, नवाचार, स्टार्टअप, उद्यमिता और ज्ञान निर्माण के केंद्र बनना होगा। उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के बीच मजबूत सहयोग स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी केवल रोजगार खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाले भी बन सकें। प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शिक्षण, वर्चुअल प्रयोगशालाएँ, स्मार्ट कक्षाएँ, ऑनलाइन शिक्षा और व्यक्तिगत सीखने की प्रणालियाँ शिक्षा को अधिक प्रभावी और सुलभ बना सकती हैं। लेकिन तकनीक का उद्देश्य शिक्षक का स्थान लेना नहीं, बल्कि उनके कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाना होना चाहिए। साथ ही, प्रत्येक छात्र तक डिजिटल संसाधनों की समान पहुँच सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

शिक्षा में समान अवसर सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत होना चाहिए। चाहे विद्यार्थी किसी भी जाति, वर्ग, लिंग, आर्थिक स्थिति या भौगोलिक क्षेत्र से आता हो, उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार मिलना चाहिए। छात्रवृत्तियाँ, समावेशी शिक्षा, दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सुविधाएँ तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल पेशेवर तैयार करना नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक बनाना भी है। विद्यार्थियों में ईमानदारी, संवेदनशीलता, पर्यावरण संरक्षण, संविधान के प्रति सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों का विकास उतना ही आवश्यक है जितना गणित, विज्ञान या तकनीक का ज्ञान।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा को राजनीतिक बदलावों से ऊपर रखा जाए। सरकारें बदलती रहेंगी, लेकिन शिक्षा की दीर्घकालिक नीतियों में निरंतरता बनी रहनी चाहिए। शिक्षा सुधार किसी एक राजनीतिक दल का कार्यक्रम नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का साझा संकल्प होना चाहिए। नीति निर्माण में शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों, उद्योग जगत, वैज्ञानिकों और समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। भारत आज जनसांख्यिकीय लाभ के ऐसे दौर में है, जहाँ करोड़ों युवा देश की सबसे बड़ी शक्ति हैं। यदि उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल और सही अवसर मिले, तो भारत विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, उद्यमिता और वैश्विक नवाचार का अग्रणी राष्ट्र बन सकता है। लेकिन यदि शिक्षा सुधारों की उपेक्षा की गई, तो यह अवसर चुनौती में बदल सकता है। आज आवश्यकता केवल राजनीतिक परिवर्तन की नहीं, बल्कि शैक्षिक परिवर्तन की है। संसदें कानून बना सकती हैं, सरकारें योजनाएँ शुरू कर सकती हैं, लेकिन राष्ट्र का वास्तविक निर्माण कक्षाओं में होता है। एक मजबूत भारत का सपना तभी साकार होगा जब हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, हर शिक्षक को सम्मान और हर विद्यालय को आवश्यक संसाधन उपलब्ध होंगे। समय आ गया है कि हम राजनीति से आगे बढ़कर शिक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाएँ। क्योंकि किसी भी देश का भविष्य चुनावी नारों से नहीं, बल्कि उसके विद्यालयों, शिक्षकों और विद्यार्थियों से तय होता है। भारत का पुनर्निर्माण शिक्षा के पुनर्निर्माण से ही संभव है।

सम्पादकीय

नितिन नबीन की नई टीम संगठन में बदलाव का संदेश

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने अपनी नई राष्ट्रीय टीम का गठन कर संगठन के भीतर बदलाव और निरंतरता का संतुलित संदेश दिया है। 17 अगस्त को घोषित 65 सदस्यीय टीम में 51 नए चेहरे हैं। साथ ही अनुभवी नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां देकर यह स्पष्ट किया गया है कि संगठन में पीढ़ी परिवर्तन का अर्थ अनुभव की अनदेखी नहीं है। नई टीम का सबसे बड़ा महत्व यही है कि इसमें भाजपा ने केवल पदों का फेरबदल नहीं किया, बल्कि आने वाले राजनीतिक दौर की जरूरतों के अनुरूप संगठन को नया स्वरूप देने की कोशिश की है। राष्ट्रीय उपाध्यक्षों, महामंत्रियों, सचिवों और विभिन्न मोर्चों में नए चेहरों को स्थान देकर नेतृत्व की दूसरी और तीसरी पंक्ति को आगे बढ़ाने का प्रयास दिखाई देता है। युवा मोर्चा समेत विभिन्न संगठनों की जिम्मेदारियां अपेक्षाकृत नए नेताओं को सौंपना इस दिशा में महत्वपूर्ण संकेत है। इसके साथ ही स्मृति ईरानी और राम माधव जैसे अनुभवी नेताओं की वापसी विशेष राजनीतिक संदेश देती है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी मिलना भी बताता है कि पार्टी अपने पुराने और प्रभावशाली नेताओं के अनुभव को फिर से संगठनात्मक शक्ति में बदलना चाहती है। पीयूष गोयल को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष बनाए रखना और विनोद तावड़े जैसे नेताओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी देना भी इसी संतुलन का हिस्सा है।

नई टीम का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू उसका सामाजिक और क्षेत्रीय विस्तार है। भाजपा ने विभिन्न राज्यों, समुदायों और सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व देने की कोशिश की है। टीम में पेशेवर पृष्ठभूमि वाले लोगों के साथ-साथ संगठन के पुराने कार्यकर्ताओं को भी जगह मिली है। इससे पार्टी यह संदेश देना चाहती है कि राष्ट्रीय संगठन केवल कुछ चुनिंदा राज्यों या चेहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका विस्तार व्यापक सामाजिक आधार तक है।

महाराष्ट्र के लिहाज से भी यह टीम महत्वपूर्ण है। विनोद तावड़े, पीयूष गोयल, भारती पवार सहित राज्य के पांच नेताओं को राष्ट्रीय संगठन में स्थान मिला है। महाराष्ट्र आगामी लोकसभा राजनीति में भाजपा के लिए महत्वपूर्ण राज्य है। इसलिए यहां के नेताओं को राष्ट्रीय जिम्मेदारी देना संगठनात्मक और चुनावी दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना जा सकता है। नई टीम का तत्काल परिणाम आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों में दिखाई पड़ सकता है। नितिन नबीन ने 22 अगस्त को नई टीम के साथ अपनी पहली बैठक में चुनावी रणनीति और जमीनी संपर्क को प्रमुखता दी। इससे संकेत मिलता है कि संगठन में किए गए बदलाव का उद्देश्य केवल आंतरिक पुनर्गठन नहीं, बल्कि चुनावी मैदान में सक्रियता बढ़ाना भी है। हालांकि किसी भी संगठनात्मक बदलाव की वास्तविक सफलता पदों की सूची से नहीं, बल्कि उसके परिणामों से तय होती है। नए पदाधिकारियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वे दिल्ली से तय रणनीति को बूथ और मंडल स्तर तक प्रभावी ढंग से पहुंचाएं। केवल नए चेहरों को जिम्मेदारी देने से संगठन मजबूत नहीं होगा; उन्हें निर्णय लेने की क्षमता, संसाधन और पर्याप्त राजनीतिक स्वतंत्रता भी देनी होगी। नितिन नबीन की टीम को इसलिए भाजपा के लिए एक प्रयोग से अधिक संगठनात्मक पुनर्संतुलन के रूप में देखना चाहिए। इसमें युवा ऊर्जा, अनुभवी नेतृत्व, क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व और चुनावी जरूरतों का मेल दिखाई देता है। अब असली परीक्षा इस बात की होगी कि यह टीम पार्टी के भीतर नई ऊर्जा पैदा करने के साथ जनता के बीच कितना प्रभावी संपर्क स्थापित कर पाती है। यदि संगठनात्मक बदलाव जमीनी सक्रियता में बदलता है, तो इसका परिणाम आने वाले चुनावों में भाजपा की राजनीतिक ताकत के रूप में सामने आ सकता है।

सियासी गहमागहमी

मीडिया रणनीति में नई जिम्मेदारी

भाजपा की नई राष्ट्रीय टीम में मध्य प्रदेश के युवा नेता आशीष ऊषा अग्रवाल को मीडिया सह संयोजक की जिम्मेदारी मिलना उनके राजनीतिक कद में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी के रूप में देखा जा रहा है। भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन की घोषित टीम में उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया से जुड़े दायित्व के लिए चुना गया है। उनके साथ अनिल बलूनी को मीडिया संयोजक तथा प्रदीप भंडारी और सिद्धार्थ यादव को सह संयोजक बनाया गया है। आशीष अग्रवाल इससे पहले मध्य प्रदेश भाजपा के मीडिया विभाग की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। प्रदेश स्तर पर मीडिया प्रबंधन और पार्टी के पक्ष को प्रभावी ढंग से सामने रखने के अनुभव ने उन्हें राष्ट्रीय भूमिका के लिए मजबूत दावेदार बनाया। राष्ट्रीय टीम में स्थान मिलना इस बात का संकेत भी है कि पार्टी युवा और संगठनात्मक रूप से सक्रिय चेहरों को आगे बढ़ाने की नीति पर काम कर रही है। उनकी नियुक्ति को मध्य प्रदेश के लिए भी उपलब्धि माना जा सकता है।

कांग्रेस में अनुभव की वापसी

मध्य प्रदेश कांग्रेस में संगठनात्मक बदलाव की तैयारियों के बीच पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को फिर बड़ी जिम्मेदारी मिलने की चर्चा ने प्रदेश की राजनीति को गरमा दिया है। कांग्रेस मौजूदा प्रदेश कार्यकारिणी में व्यापक बदलाव की तैयारी कर रही है और मिशन 2028 को ध्यान में रखते हुए नए सिरे से संगठन खड़ा करने की कवायद चल रही है। कमलनाथ का लंबा राजनीतिक अनुभव, प्रशासनिक समझ और छिंदवाड़ा सहित प्रदेश के कई हिस्सों में प्रभाव उन्हें कांग्रेस के लिए अब भी उपयोगी बनाता है। हालांकि 2023 के विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी उनसे लेकर जीतू पटवारी को दी गई थी, लेकिन पार्टी के मौजूदा संगठनात्मक पुनर्गठन में उनके अनुभव को नजरअंदाज करना आसान नहीं होगा। कमलनाथ को जिम्मेदारी मिलती है तो इसे कांग्रेस की रणनीति में अनुभवी नेतृत्व को फिर सक्रिय करने के संकेत के रूप में देखा जाएगा। भाजपा के मजबूत संगठन के मुकाबले कांग्रेस को बूथ स्तर तक कार्यकर्ताओं को जोड़ने और गुटबाजी कम करने की चुनौती है। ऐसे में कमलनाथ की भूमिका संगठन और वरिष्ठ नेताओं के बीच समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण हो सकती है। हालांकि केवल बड़े नामों को जिम्मेदारी देने से कांग्रेस की स्थिति नहीं बदलेगी। नई टीम को युवा नेतृत्व, जमीनी कार्यकर्ताओं और वरिष्ठ नेताओं के बीच संतुलन बनाना होगा। कमलनाथ यदि अपनी राजनीतिक पकड़ को संगठन की सक्रियता में बदल पाते हैं, तो उनकी नई भूमिका कांग्रेस के लिए उपयोगी साबित हो सकती है।

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

साहिल की FIR दर्ज न होने देने का एक ही मतलब है - नरेंद्र मोदी और अमित शाह के राज में शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं पर खुलेआम पैलेट गन चलाई जा सकती है, मगर उन्हें इंसाफ नहीं मिल सकता।

जब तक FIR दर्ज नहीं होती, जब तक दोषियों पर कड़ी कार्रवाई का भरोसा नहीं मिलता - हम डटे रहेंगे।

लक्ष्य न्याय है और वो हर हाल में लेकर ही रहेंगे।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

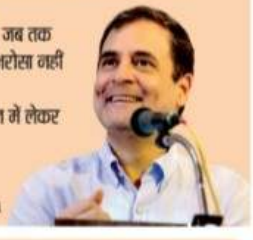

देश के युवा लगातार मेहनत करते हैं कि उन्हें अच्छी नौकरी मिले। करोड़ों युवा प्रतियोगी परीक्षाओं की वर्षों तक तैयारी करते हैं। लेकिन लगता है कि भाजपा सरकार इन युवाओं के भविष्य को अंधकार में धकेलना चाहती है।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

रक्षाबंधन पर्व के पहले मिली महतारी वंदन योजना की 30वी किश्त

-दुर्गेश अरमोती

जगत प्रवाह. रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में संचालित महतारी वंदन योजना अब महिलाओं के सम्मान, स्वाभिमान, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार बन चुकी है। योजना के तहत प्रतिमाह एक हजार रुपये की सहायता सीधे डीबीटी के माध्यम से महिलाओं के बैंक खातों में पहुंचाई जा रही है। रक्षाबंधन के पावन पर्व से पहले छत्तीसगढ़ की बहनों को मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने महतारी वंदन योजना की 30वीं किस्त के रूप में विशेष उपहार दिया है। 7 अगस्त 2026 को जारी 30वीं किस्त

के साथ प्रदेश की पात्र महिलाओं के बैंक खातों में 19,444 करोड़ 33 लाख रुपये से अधिक की राशि अंतरित की जा चुकी है। रक्षाबंधन से पहले खाते में पहुंची यह राशि महिलाओं के लिए आर्थिक संबल के साथ पर्व की खुशियों को और बढ़ाने वाली सौगात बन गई है।

महिलाओं का कहना है कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने रक्षाबंधन से पहले महतारी वंदन की राशि देकर बहनों की खुशियों को दोगुना कर दिया है। उनके लिए यह केवल एक हजार रुपये की मासिक सहायता नहीं, बल्कि अपने छोटे-बड़े फैसले स्वयं लेने का भरोसा और सम्मान का अहसास है। महतारी वंदन योजना ने महिलाओं की घरेलू निर्णयों में भागीदारी को मजबूत करने के साथ बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य पर खर्च को बढ़ावा दिया है। महिलाओं के हाथ में नियमित आर्थिक सहायता पहुंचने से परिवारों में आर्थिक स्थिरता और आत्मविश्वास बढ़ा है। महतारी वंदन योजना की यह कहानी केवल आर्थिक सहायता की कहानी नहीं है। यह उस विश्वास की कहानी है, जिसमें मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की मातृशक्ति को सम्मान, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता की नई ताकत मिल रही है। रक्षाबंधन से पहले बहनों के खातों में पहुंची राशि उनके लिए ''विष्णु भैया का उपहार'' बनकर पर्व की खुशियों को और खास बना रही है।

रीवा में बाढ़ का कहर, 250 गांव प्रभावित; छह लोगों की मौत

-संवाददाता

जगत प्रवाह. रीवा। जिले में लगातार हुई भारी बारिश के बाद हालात गंभीर बने हुए हैं। जिले के करीब 250 गांव बाढ़ से प्रभावित बताए जा रहे हैं और पिछले तीन दिनों में बारिश से जुड़ी घटनाओं में छह लोगों की मौत की सूचना है। करीब 5,000 मकानों पर भी बाढ़ का असर पड़ा है। लगातार बारिश और पड़ोसी उत्तर प्रदेश के बांधों से छोड़े गए पानी के कारण तमस, बेलन, नैना और सरसी नदियों का जलस्तर बढ़ गया है। त्योंथर, गुढ़ और रीवा शहर के कई हिस्से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। त्योंथर क्षेत्र में हालात इतने खराब रहे कि कुछ इलाकों तक पहुंचने के लिए अधिकारियों को करीब एक किलोमीटर तक मोटरबोट का सहारा लेना पड़ा।

राहत-बचाव में जुटी टीमें

प्रशासन ने प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए NDRF, SDRF, होमगार्ड और पुलिस की टीमें तैनात की हैं। करीब 3,000 लोगों को राहत शिविरों में पहुंचाया गया, जहां भोजन और जरूरी सामान उपलब्ध कराया जा रहा है। कई गांवों का सड़क संपर्क टूट गया और रेस्क्यू अभियान चलाकर लोगों को सुरक्षित निकाला गया। रीवा कलेक्टर और पुलिस प्रशासन प्रभावित क्षेत्रों का लगातार जायजा ले रहे हैं। निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है। मौसम विभाग ने भी पूर्वी मध्यप्रदेश में बारिश की गतिविधियां जारी रहने की संभावना जताई है, जिससे प्रशासन की चिंता अभी बनी हुई है। स्थिति पर प्रशासन की नजर बनी हुई है और नदी-नालों के आसपास रहने वाले लोगों से सावधानी बरतने की अपील की गई है।

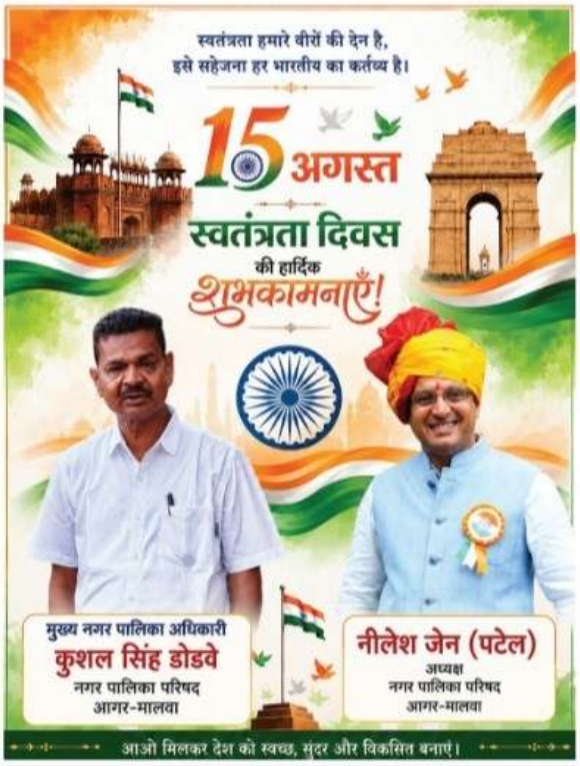

सरकारें बदलीं, आंदोलन बदले, लेकिन जनता की ताकत कायम रही

जनता की एकजुटता बनाम सत्ता स्वतंत्र भारत के जनआंदोलनों की गाथा

-विजया पाठक

भारत का लोकतंत्र केवल संसद, विधानसभाओं और चुनावों से संचालित व्यवस्था नहीं है। इसकी असली ताकत उस जनता में है, जो अपने अधिकारों, सम्मान, आजीविका और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए समय-समय पर सड़कों पर उतरती रही है। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज तक देश ने अनेक ऐसे जनआंदोलन देखे हैं, जिन्होंने सरकारों को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने, निर्णय वापस लेने अथवा सत्ता का रुख बदलने के लिए विवश किया। इन आंदोलनों की प्रकृति अलग-अलग रही-कहीं किसान आगे आए, कहीं मजदूर, कहीं विद्यार्थी, कहीं महिलाएं, आदिवासी, पर्यावरण कार्यकर्ता या नागरिक समाज। लेकिन इन सबमें एक समान तत्व था—सामूहिकता की शक्ति। यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि जनता के हर आंदोलन के सामने हर सरकार को अनिवार्य रूप से झुकना ही पड़ता है। इतिहास में ऐसे भी आंदोलन हैं जो तत्काल अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए। फिर भी भारतीय लोकतंत्र का अनुभव यह जरूर बताता है कि जब किसी मुद्दे को व्यापक सामाजिक समर्थन मिलता है, आंदोलन लंबे समय तक शांतिपूर्ण और संगठित रहता है तथा सत्ता के लिए उसकी उपेक्षा राजनीतिक और सामाजिक रूप से महंगी होने लगती है, तो सरकार को अंततः संवाद, समझौते या नीति-परिवर्तन की राह अपनानी पड़ती है।

स्वतंत्रता के बाद भी जारी रहा जनप्रतिरोध

आजादी के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी विविधताओं से भरे समाज को लोकतांत्रिक ढांचे में एक साथ लेकर चलना। भाषाई पहचान, भूमि, रोजगार, सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय अधिकारों को लेकर अनेक आंदोलनों ने जन्म लिया। आंध्र प्रदेश के लिए पोट्टि श्रीरामुलु के आंदोलन और उनके निधन के बाद पैदा हुए व्यापक जनदबाव ने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में ला दिया। इसके बाद 1956 में राज्यों के पुनर्गठन का बड़ा कदम उठाया गया। महाराष्ट्र और गुजरात के गठन के लिए चला संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन भी जनदबाव की ताकत का उदाहरण बना। इसी दौर में किसानों और भूमिहीनों से जुड़े आंदोलनों ने भी सरकारों को भूमि-सुधार और ग्रामीण नीतियों पर ध्यान देने के लिए मजबूर किया। स्वतंत्र भारत का प्रारंभिक इतिहास बताता है कि लोकतंत्र में जनता केवल चुनाव के दिन मतदाता नहीं होती, वह लगातार नीति-निर्माण को प्रभावित करने वाली शक्ति भी है।

विद्यार्थी आंदोलन से सत्ता परिवर्तन तक

1970 के दशक में गुजरात का नवनिर्माण आंदोलन और बिहार का विद्यार्थी आंदोलन भारतीय राजनीति के निर्णायक मोड़ साबित हुए। महंगाई, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अव्यवस्था के विरोध में गुजरात में विद्यार्थियों से शुरू हुआ आंदोलन व्यापक जनआंदोलन में बदल गया। इसके बाद बिहार में छात्रों के आंदोलन को जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व मिला। जेपी ने इसे केवल सरकार बदलने का आंदोलन न मानकर राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन का अभियान बनाया। आंदोलन में विद्यार्थी, किसान, कर्मचारी और विभिन्न राजनीतिक धाराएं एक मंच पर आईं। इसी दौर का व्यापक असंतोष अंततः 1975 के आपातकाल और उसके बाद की राजनीति से जुड़ा। 1977 के आम चुनाव में जनता पार्टी के नेतृत्व में विपक्षी शक्तियों की एकजुटता ने कांग्रेस को केंद्र की सत्ता से बाहर कर दिया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में महत्वपूर्ण उदाहरण था कि जब जनता राजनीतिक रूप से संगठित होकर सत्ता के विरुद्ध

अपना मत व्यक्त करती है, तो सबसे शक्तिशाली सरकार भी चुनावी परिणामों से नहीं बच सकती।

किसान और ग्रामीण भारत की आवाज

भारत के जनआंदोलनों की कहानी किसानों के बिना अधूरी है। महाराष्ट्र का शेतकारी आंदोलन, कर्नाटक के किसान आंदोलन, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और पंजाब-हरियाणा के किसान संघर्ष तथा विभिन्न राज्यों के स्थानीय भूमि आंदोलनों ने समय-समय पर कृषि नीति को प्रभावित किया। इन आंदोलनों की विशेषता यह रही कि किसान संगठनों ने स्थानीय समस्याओं को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ा। बिजली की दर, फसल का मूल्य, कर्ज, सिंचाई, भूमि अधिग्रहण और बाजार व्यवस्था जैसे मुद्दे केवल किसानों तक सीमित नहीं रहे बल्कि व्यापक राजनीतिक प्रश्न बन गए। नर्मदा बचाओ आंदोलन ने विकास बनाम विस्थापन के प्रश्न को राष्ट्रीय बहस का हिस्सा बनाया। मेधा पाटकर के नेतृत्व में चले इस आंदोलन ने बड़े बांधों, विस्थापन और पुनर्वास की नीतियों पर गंभीर सवाल खड़े किए। इसी तरह चिपको आंदोलन ने पहाड़ों में ग्रामीण महिलाओं और स्थानीय समुदायों की भागीदारी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को जन-अधिकार के रूप में स्थापित किया। इन आंदोलनों ने दिखाया कि जनता की एकजुटता केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं है; वह विकास की दिशा पर भी सवाल उठा सकती है।

मंडल, सामाजिक न्याय और सड़कों पर संघर्ष

1990 का दशक सामाजिक न्याय की राजनीति के लिए निर्णायक रहा। मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने के निर्णय के बाद देश में समर्थन और विरोध, दोनों प्रकार के व्यापक आंदोलन हुए। एक ओर पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय की मांग मजबूत हुई, दूसरी ओर आरक्षण के विरोध में विद्यार्थियों और युवाओं के बड़े प्रदर्शन हुए। यह दौर बताता है कि जनआंदोलन हमेशा एक ही दिशा में नहीं चलते। कभी जनता सरकार की नीति बदलने की मांग करती है और कभी समाज के अलग-अलग वर्ग किसी नीति के पक्ष या विरोध में सड़कों पर उतरते हैं। लोकतंत्र की चुनौती यही है कि सरकार इन विरोधी आवाजों के बीच संतुलन कायम करे।

भ्रष्टाचार के खिलाफ राष्ट्रव्यापी लामबंदी

2011 का अन्ना हजारे आंदोलन स्वतंत्र भारत के सबसे प्रभावशाली जनआंदोलनों में शामिल है। लोकपाल की मांग को लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर और रामलीला मैदान में उमड़ी भीड़ ने भ्रष्टाचार के मुद्दे को राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श के केंद्र में ला दिया। इस आंदोलन की सबसे बड़ी ताकत यह थी कि इसमें केवल राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं थे। मध्यम वर्ग, युवा, विद्यार्थी, नौकरीपेशा लोग और सामाजिक संगठनों से जुड़े लोग बड़ी संख्या में इससे जुड़े। सोशल मीडिया ने पहली बार किसी बड़े राष्ट्रीय आंदोलन को अभूतपूर्व गति दी। आंदोलन ने यह संदेश दिया कि जनता यदि किसी मुद्दे को अपनी सामूहिक चिंता बना ले तो सरकार के लिए उसे नजरअंदाज करना कठिन हो जाता है। इसी आंदोलन से निकली राजनीतिक ऊर्जा ने आगे चलकर दिल्ली की राजनीति को भी बदल दिया।

मोदी सरकार का दौर आंदोलन और सत्ता की परीक्षा

2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र में नई सरकार बनी। इसके बाद भी देश में कई बड़े जनआंदोलन हुए। भूमि अधिग्रहण से लेकर नागरिकता कानून, विश्वविद्यालयों के मुद्दों, बेरोजगारी, अग्निपथ योजना और कृषि कानूनों तक विभिन्न वर्गों ने सरकार की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। 2019 में नागरिकता संशोधन कानून (CAA) के खिलाफ देश के अनेक हिस्सों में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए। दिल्ली का शाहीन बाग आंदोलन विशेष रूप से चर्चित हुआ, जहां महिलाओं और नागरिकों की लंबी अवधि की भागीदारी ने इसे राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बना दिया। यह आंदोलन अत्यंत विवादास्पद भी रहा और इसके समर्थन तथा विरोध में तीखी राजनीतिक बहस हुई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि नागरिकता और संविधान जैसे प्रश्नों पर जनता की भावनात्मक भागीदारी कितनी गहरी हो सकती है।

किसान आंदोलन एकजुटता की सबसे बड़ी मिसाल

2020-21 का किसान आंदोलन इस पूरे दौर का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है। तीन कृषि कानूनों के विरोध में पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और देश के दूसरे हिस्सों से किसान दिल्ली की सीमाओं पर पहुंचे। विभिन्न किसान संगठनों ने अपने मतभेदों के बावजूद संयुक्त मंच बनाया। यह आंदोलन लगभग एक वर्ष तक चला। सरकार और किसान संगठनों के बीच कई दौर की वार्ता हुई। जनवरी 2021 में सर्वोच्च न्यायालय ने भी कानूनों के क्रियान्वयन पर रोक लगाई। 19 नवंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में तीनों कृषि कानून वापस लेने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि सरकार संसद के आगामी सत्र में इन्हें निरस्त करने की संवैधानिक प्रक्रिया पूरी करेगी। इसके बाद 29 नवंबर 2021 को संसद ने फॉर्म्स लॉ रिपील बिल पारित किया। यह घटना इस बात की महत्वपूर्ण मिसाल बनी कि लंबे समय तक चलने वाला, संगठित और व्यापक जनआंदोलन सरकार की नीति को बदलने की क्षमता रखता है।

बेरोजगारी और युवाओं का आक्रोश

मोदी सरकार के कार्यकाल में रोजगार और प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर भी युवाओं के आंदोलन सामने आए। रेलवे भर्ती, अग्निपथ योजना और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ युवाओं ने अलग-अलग समय पर प्रदर्शन किए। 2026 में परीक्षा-व्यवस्था और पेपर लीक के मुद्दे पर युवाओं का नया आंदोलन सामने आया। अगस्त 2026 में झारखंड में हजारों युवाओं के प्रदर्शन और पुलिस के साथ टकराव ने एक बार फिर रोजगार, निष्पक्ष भर्ती और सरकारी परीक्षाओं की विश्वसनीयता को राष्ट्रीय चर्चा में ला दिया। हाल के महीनों में युवाओं के आंदोलन ने केंद्र सरकार पर भी राजनीतिक दबाव बनाया है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार 2026 के छात्र आंदोलन ने शिक्षा व्यवस्था और परीक्षा संबंधी शिकायतों को लेकर सरकार की जवाबदेही का प्रश्न उठाया और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे तक राजनीतिक दबाव बनाया।

आंदोलन और देश की प्रतिष्ठा

किसी लोकतांत्रिक देश में शांतिपूर्ण विरोध स्वयं देश की कमजोरी नहीं, बल्कि लोकतंत्र की जीवंतता का प्रमाण हो सकता है। लेकिन जब आंदोलन लंबे समय तक जारी रहें, हिंसा हो, पुलिस और प्रदर्शनकारियों में टकराव हो अथवा सरकार और जनता के बीच संवाद समाप्त होता दिखाई दे, तो उसका प्रभाव देश की अंतरराष्ट्रीय छवि पर पड़ सकता है। भारत स्वयं को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहता है। इसलिए भारत से अपेक्षा भी यही रहती है कि असहमति को लोकतांत्रिक तरीके से सुना जाए। किसानों के आंदोलन का शांतिपूर्ण समाधान और कृषि कानूनों की वापसी लोकतांत्रिक संवाद का उदाहरण बनी; वहीं लंबे समय तक चलने वाले तनावपूर्ण आंदोलनों ने यह सवाल भी उठाया कि सरकारों को जनता की शिकायतों पर पहले ही गंभीरता से संवाद क्यों नहीं करना चाहिए।

लोकतंत्र की असली ताकत जनता है

1947 से आज तक के भारतीय जनआंदोलनों को देखने पर एक बात स्पष्ट होती है सत्ता चाहे किसी भी दल की हो, जनता की संगठित और लोकतांत्रिक शक्ति को लंबे समय तक नजरअंदाज करना आसान नहीं होता। कभी भाषाई पहचान ने सरकार को राज्यों की सीमाएं बदलने के लिए प्रेरित किया, कभी विद्यार्थियों और नागरिकों ने राजनीतिक परिवर्तन की जमीन तैयार की, कभी पर्यावरण आंदोलनों ने विकास की अवधारणा पर प्रश्न खड़े किए और कभी किसानों की एकजुटता ने संसद से पारित कानूनों को वापस लेने की परिस्थितियां पैदा कीं। लेकिन जनता की शक्ति का अर्थ केवल भीड़ जुटाना नहीं है। वास्तविक शक्ति संगठन, शांतिपूर्ण अनुशासन, स्पष्ट मांग, व्यापक सामाजिक समर्थन और लोकतांत्रिक वैधता से पैदा होती है। इसी कारण भारतीय लोकतंत्र में आंदोलन सत्ता के विरुद्ध युद्ध नहीं, बल्कि सत्ता को उसकी जवाबदेही याद दिलाने का संवैधानिक-सामाजिक माध्यम हैं। इतिहास का सबसे बड़ा सबक यही है कि सरकारें स्थायी नहीं होतीं, लेकिन जनता की सामूहिक चेतना लोकतंत्र की स्थायी शक्ति है। जब अलग-अलग जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और राजनीतिक विचारों से ऊपर उठकर नागरिक किसी साझा प्रश्न पर एकजुट होते हैं, तब सरकार को उनकी आवाज सुननी पड़ती है। वह तुरंत झुके, बातचीत करे, संशोधन करे या अंततः अपना निर्णय वापस ले रास्ता कोई भी हो, लोकतंत्र में अंतिम नैतिक शक्ति जनता की सहमति से ही आती है। यही भारत के जनआंदोलनों की सबसे बड़ी विरासत है। सत्ता कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, संगठित, जागरूक और लोकतांत्रिक जनता उसकी जवाबदेही तय करने की क्षमता रखती है।

पर्यावरण की फिक्र

डॉ. प्रशांत सिन्हा
पर्यावरणविद

पेड़ लगाना आसान, जंगल बनाना ज़रूरी

हम अक्सर सोच लेते हैं कि कई पेड़ लगा कर हम जंगल बना देंगे। वास्तविकता इतनी सरल नहीं है। जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि जटिल जैविक और सामाजिक तंत्र है जिसमें वनस्पति, जीव-जंतु, मिट्टी, जल-संरचना और स्थानीय लोग इन सभी की भूमिकाएँ जुड़ी होती हैं। यदि हम सिर्फ पेड़ लगाते हैं और उनकी देखभाल, जैविक विविधता व स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर ध्यान नहीं देते, तो वह "जंगल" अक्सर नाम मात्र ही रह जाता है। वन केवल रोपण नहीं, वह मिट्टी की ओंछाई, वृक्षों के बीच पारस्परिक सहजीवन, परागणकर्ता और वन्यजीवों का अस्तित्व भी है। एक ही प्रजाति के बड़े पेड़ों एवं सिंचित ग्रिड पेड़ों से रोग और कीट का खतरा बढ़ता है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी न होने पर पेड़ काटे जाते हैं, आग लगती है और संरक्षण नीतियाँ नाम मात्र रह जाती हैं। नीतियों को भी इसी सच्चाई के

अनुसार आकार देना होगा: किस्मों की विविधता, जल-भंडारण और दीर्घकालिक देखरेख पर बजट और जवाबदेही जरूरी है।

सफल वनीकरण के लिये बहुविध प्रजातियों का चयन, मिट्टी व जल संरक्षण, नियमित निगरानी और स्थानीय लोगों को कार्यक्रम में सहभागी बनाना आवश्यक है। स्कूलों और नागरिक समूहों को दीर्घकालिक जिम्मेदारी दी जानी चाहिए, न कि सिर्फ 'एक बार पेड़ लगाओ' जैसी अभियान-आधारित पहल। नीतिगत समर्थन, पैदावार-उन्मुख तकनीकें और पारिस्थितिक ज्ञान का सामंजस्य ही असली जंगल बनाता है न कि केवल पेड़ों की गिनती। हमारे वादों की हरियाली अब लुभावनी आंकड़ों तक सिमट कर रह गई है। त्योहारों में सौ-पाँच सौ पौधे लगा कर हम खुद को पर्यावरण रक्षक समझ लेते हैं, जबकि असलियत में वह रोपे पौधे अक्सर सूख कर या कट कर खत्म हो जाते हैं।

सरकारों, नगर निकायों और नागरिक समूहों को सामूहिक जिम्मेदारी अपनानी होगी। रोपण के बाद रख-रखाव, निगरानी और स्थानीय रोजगार के अवसर सुनिश्चित करना होगा। स्कूली पाठ्यक्रम और मीडिया को भी 'पेड़ गिनना' से ऊपर उठकर वनीकरण के विज्ञान और समाजशास्त्र का प्रचार करना चाहिए। तभी नकली हरियाली के बजाय वास्तविक, टिकाऊ जंगल उभरेंगे। जितना शोर पेड़ लगाने में किया जाता है, उतनी ही गंभीरता उनकी परवरिश में दिखनी चाहिए। वरना हम चाहकर भी जंगल नहीं, सिर्फ कागज पर हरी-भरी धोखाधड़ी ही उगाएँगे। पेड़ लगाना केवल पहला कदम है। जंगल तब बनते हैं जब विविधता, जल-भूमि की समझ और स्थानीय सहभागिता के साथ दीर्घकालिक नीति मिलती है।

संस्कृति, संघर्ष और समाधान की आदिवासी गाथा

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

"जब आप किसी आदिवासी समूह को देखते हैं, तो आप सिर्फ कुछ लोगों को नहीं, बल्कि हजारों साल पुरानी प्रकृति की आत्मा को साक्षात देखते हैं। उन्हें समझने के लिए आँखें नहीं, हृदय की दृष्टि चाहिए।" आज जब पूरा विश्व आदिवासी दिवस मना रहा है, तो मेरा मन 40 साल पीछे, उस दौर में लौट जाता है, जब मैंने एक युवा सब-इंस्पेक्टर के रूप में अलीराजपुर की धरती पर पहला कदम रखा था। तब अलीराजपुर, झाबुआ जिले का एक हिस्सा था और यह क्षेत्र एशिया के सबसे अधिक अपराध प्रभावित क्षेत्रों में गिना जाता था। वर्दी की अपनी चुनौतियाँ थीं, लेकिन उस दुर्गम इलाके ने मुझे जो सिखाया, वह किसी किताब या ट्रेनिंग में मिलना असंभव था।

वो दौर: जब जंगल का न्याय कानून पर भारी था

मैंने अपनी आँखों से देखा कि अपराध की जड़ें समाज की गहराइयों में कैसे पनपती हैं। वहां अपराध महज एक घटना नहीं, बल्कि अभाव, अशिक्षा और अवसरों की कमी से उपजा एक परिणाम था।

शिक्षा और स्वास्थ्य? मीलों तक कोई स्कूल या अस्पताल नहीं था। बीमारी का मतलब या तो स्थानीय जड़ी-बूटियों पर निर्भरता थी या फिर नियति के भरोसे रहना।

कानून का डर? लोगों के लिए जंगल का न्याय और गाँव के पंच का फैसला ही अंतिम सत्य था। थाने और अदालतें उनकी दुनिया से बहुत दूर थीं। जहां थाने का दरवाजा भी उतना ही दूर था, जितना शहर का सपना।

महिलाओं का संघर्ष: वे घर, खेत और परिवार की धुरी थीं, लेकिन आर्थिक रूप से पूरी तरह निर्भर और असुरक्षित। लेकिन इस कठोर कैनवास पर मैंने संस्कृति के सबसे जीवंत रंग भी देखे। मैंने आदिवासियों के हृदय की सरलता, प्रकृति के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा और उनकी कला की गहराई को महसूस किया। होली से पहले जब भगोरिया का मेला सजता था, तो हवा में घुले मांदल के संगीत और युवाओं के उल्लास को देखकर लगता था मानो जीवन का उत्सव इससे बड़ा नहीं हो सकता। मैंने देखा कि वे पेड़ों को जीवित आत्मा, नदियों को माँ और पहाड़ों को देवता क्यों मानते हैं। उनकी जीवनशैली पिछड़ी नहीं, बल्कि आज की दुनिया के लिए 'सस्टेनेबल लिविंग' का सबसे बड़ा उदाहरण थी।

सफर बदला, नज़रिया बदला: वर्दी से लेकर नीति-निर्माण तक

समय के साथ मेरी भूमिका बदली। पुलिस अधिकारी के रूप में मैंने ज़मीन पर समस्याओं को समझा, तो बाद में केंद्रीय मंत्री और फिर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी (OSD) के रूप में मुझे उन समस्याओं के समाधान के लिए नीतियां बनते और लागू होते देखने का अवसर मिला। यह एक अद्भुत अनुभव था। दिल्ली और भोपाल के दफ्तरों में जब आदिवासियों के विकास की फाइलें चलती थीं, तो मेरे सामने झाबुआ-अलीराजपुर के वो चेहरे घूम जाते थे। मैं जानता था कि एक सड़क का बनना सिर्फ आवागमन नहीं, बल्कि किसी बीमार बच्चे के लिए अस्पताल तक पहुँचने की उम्मीद है। एक स्कूल का खुलना सिर्फ एक इमारत नहीं, बल्कि पीढ़ियों की गरीबी से मुक्ति का दरवाजा है।

चुनौतियाँ आज भी हैं: अब हमें क्या करना है?

आज भी जब मैं उन क्षेत्रों में जाता हूँ, तो देखता हूँ कि भौगोलिक कठिनाइयाँ, कुछ युवाओं में नशे की बढ़ती लत और बेहतर अवसरों के लिए होने वाला पलायन बड़ी चुनौतियाँ हैं। कभी-कभी लगता है कि विकास की कुछ योजनाएँ उदासीनता और अन्य कारणों से उन तक नहीं पहुँच पातीं, जिनके लिए वे बनी हैं। सबसे बड़ा खतरा उनकी संस्कृति के क्षरण का है, जो बाहरी चमक-दमक में अपनी पहचान खो रही है। यहाँ किसी को दोष देने का समय नहीं है। अब हमें एक साझा जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना होगा।

समाज के रूप में: हमें आदिवासी समाज को 'पिछड़ा' या 'गरीब' समझकर सहानुभूति दिखाने की बजाय, उनके ज्ञान और हुनर का सम्मान करना होगा। उनकी कला, उनके हस्तशिल्प को बाज़ार देकर हम उन्हें आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

सरकार के स्तर पर: योजनाओं को फाइलों से निकालकर ज़मीन पर प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। हमें सुनिश्चित करना होगा कि जल, जंगल और ज़मीन पर उनके संवैधानिक अधिकारों की रक्षा हो। युवाओं के लिए पारंपरिक कलाओं के साथ-साथ आधुनिक कौशल विकास और खेल-कूद के बेहतरीन अवसर बनाने होंगे।

रक्षाबंधन पर्व पर महिलाओं को मुख्यमंत्री धामी की बड़ी सौगात

-प्रमोद कुमार

जगत प्रवाह. देहरादून। रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश की महिलाओं को बड़ी सौगात दी है। रक्षाबंधन के अवसर पर 28 एवं 29 अगस्त 2026 को उत्तराखंड की महिलाएं प्रदेश के भीतर उत्तराखंड परिवहन निगम द्वारा संचालित बसों में शत-प्रतिशत किराया छूट के साथ निशुल्क यात्रा कर सकेंगी। उत्तराखंड शासन द्वारा इस संबंध में आदेश जारी कर उत्तराखंड परिवहन निगम को आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। आदेश के अनुसार रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर 28 और 29 अगस्त को प्रदेश की महिलाओं को उत्तराखंड परिवहन निगम की बसों में यात्रा के लिए कोई किराया नहीं देना होगा। रक्षाबंधन पर्व पर बड़ी संख्या में महिलाएं अपने मायके एवं परिजनों से मिलने के लिए यात्रा करती हैं। राज्य सरकार की इस पहल से उन्हें सुरक्षित, सुगम एवं निशुल्क सार्वजनिक परिवहन की सुविधा मिलेगी। सरकार का उद्देश्य पर्व के दौरान महिलाओं के आवागमन को आसान बनाना तथा उन्हें आर्थिक राहत प्रदान करना है। रक्षाबंधन पर प्रदेश की बहनों के लिए धामी सरकार का यह निर्णय महिला सम्मान, सुविधा और सशक्तिकरण की दिशा में एक और महत्वपूर्ण पहल है।

बाढ़ प्रभावित सबंग क्षेत्र का मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने किया हवाई सर्वेक्षण

-अमित राय

जगत प्रवाह. कोलकाता। पश्चिम बंगाल में लगातार बारिश के बाद कई इलाकों में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। इसी बीच मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने पश्चिम मेदिनीपुर जिले के बाढ़ प्रभावित सबंग इलाके का हवाई सर्वेक्षण कर स्थिति का जायजा लिया। हवाई सर्वेक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने बाढ़ के पानी से प्रभावित गांवों, जलभराव वाले इलाकों और लोगों की स्थिति को देखा। इसके बाद उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ राहत और बचाव कार्यों की समीक्षा की तथा प्रभावित लोगों तक जरूरी सहायता पहुंचाने के निर्देश दिए। बताया जा रहा है कि सबंग और आसपास के करीब पांच से छह ग्राम पंचायत क्षेत्रों में लगभग 50 हजार लोग बाढ़ से प्रभावित होकर फंसे हुए हैं। वहीं करीब 3,200 घरों को नुकसान पहुंचने की जानकारी सामने आई है। मुख्यमंत्री ने क्षतिग्रस्त मकानों के लिए प्रति घर 30 हजार रुपये

की सहायता देने की घोषणा की है। बाढ़ के दौरान दो लोगों की मौत की भी जानकारी सामने आई है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिवारों को 9-9 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की है। प्रशासन को राहत सामग्री, पेयजल और जरूरी सहायता प्रभावित लोगों तक पहुंचाने के निर्देश दिए गए हैं।

सेवा सेतु
जनता के द्वार, डिजिटल सरकार

डिजिटल सुशासन की नई पहचान
सेवाएं हुईं **त्वरित, पारदर्शी और आसान**

520
शासकीय सेवाएं
घर बैठे, एक क्लिक में

नागरिकों के लिए सरल, तेज और पारदर्शी सेवाएं

R.O. No. : 13930/ 2

95.9%
आवेदनों का निराकरण

- 38 लाख+ आवेदन
- 16,700+ सेवा केंद्र
- 36 विभाग एक मंच पर

प्रमुख सेवाएं

- ✓ जाति प्रमाण पत्र
- ✓ आय प्रमाण पत्र
- ✓ निवास प्रमाण पत्र
- ✓ विवाह प्रमाण पत्र
- ✓ राशन कार्ड सेवाएं
- ✓ पेंशन योजनाएं
- ✓ नाम परिवर्तन सेवा
- ✓ व्यापार लाइसेंस

अधिक जानकारी हेतु स्कैन करें

जनहित में तकनीक, जनसेवा में नवाचार

sewasetu.cgstate.gov.in

92034 06400

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)